भारतीय सांख्यिकी प्रणाली

विकास को बढ़ावा देने के लिए डेटा को बेहतर तरीके से समझना

परिचय

किसी देश की सांख्यिकी प्रणाली उस देश का दर्पण होती है। सांख्यिकी प्रणाली की सहायता से ही किसी देश के विभिन्न क्षेत्रकों से संबंधित आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। इन आंकड़ों के पर्यवेक्षण से पर्यवेक्षक यह पता लगाने में सक्षम हो जाते हैं कि कोई देश प्रमुख सामाजिक-आर्थिक मापदंडों (जैसे- प्रति व्यक्ति आय, गरीबी, स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष आदि) पर कितना बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। वर्तमान में, भारत डेटा क्रांति के शिखर पर है और सार्वजनिक डेटासेट की संख्या हर साल बढ़ रही है। इससे उपयोगकर्ताओं को अर्थव्यवस्था और देश के नए पहलुओं को जानने का अवसर मिलता रहता है। हालांकि, डेटा संग्रह में देरी और आधिकारिक डेटा में कमियों से संबंधित सवाल इसकी उपयोगिता को कम कर देते हैं। आँकड़ों से निकाले गए निष्कर्ष केवल उतने ही अच्छे होते हैं, जितने अच्छे आधिकारिक आंकड़े होते हैं।

इस डॉक्यूमेंट में हम निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करेंगे:

1. **आधिकारिक सांख्यिकी क्या है?** 2
   - 1.1. एक आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली का क्या महत्त्व है? 2
   - 1.2. भारत में वर्तमान आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली की संरचना कैसी है? 4
2. **भारत की आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली का विकास कैसे हुआ है?** 5
   - 2.1. स्वतंत्रता-पूर्व सांख्यिकी प्रणाली किस स्तर तक विकसित थी? 5
   - 2.2. स्वतंत्रता के बाद सांख्यिकी प्रणाली से संबंधित प्रमुख विकास क्या थे? 5
3. **भारत की आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में कौन-कौन सी चुनौतियां मौजूद हैं?** 6
4. **आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में सुधार के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?** 7
   - 4.1. सरकार द्वारा शुरू की गई प्रमुख पहलें क्या हैं? 7
   - 4.2. आधिकारिक सांख्यिकी पर राष्ट्रीय नीति (NPOS) कैसे मदद कर सकती है? 8
5. **भारत की आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली को और बेहतर बनाने के लिए क्या किया जा सकता है?** 9

निष्कर्ष 10

टॉपिक: एक नज़र में 11

बॉक्स, टेबल और चित्र 12

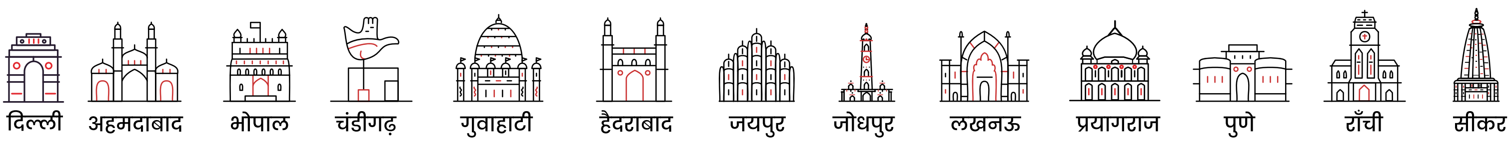

1. आधिकारिक सांख्यिकी क्या है?

आंकड़ों (सांख्यिकी) को प्रकाशित करने वाले निकाय के आधार पर आंकड़ों को विभाजित किया जा सकता है। सरकारी एजेंसियों द्वारा जारी किए गए आंकड़े आधिकारिक आंकड़े कहलाते हैं। ये आंकड़े सांख्यिकीय सर्वेक्षणों, पंजीकरण रिकॉर्ड आदि से प्राप्त किए जाते हैं। उदाहरण के लिए: उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI), औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) आदि।

दूसरी ओर, गैर-सरकारी निकायों द्वारा प्रकाशित आंकड़े गैर-आधिकारिक आंकड़े कहलाते हैं। उदाहरण के लिए: अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) द्वारा जारी वर्ल्ड ऑफ वर्क रिपोर्ट, गैर-सरकारी संगठन 'प्रथम' की ASER रिपोर्ट आदि।

1.1. एक आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली का क्या महत्त्व है?

- **सामाजिक-आर्थिक अनुमान:** अधिकांश सांख्यिकीय कार्यालय अपने देशों के लिए प्रमुख सामाजिक-आर्थिक आंकड़े जारी करते हैं। उदाहरण के लिए: गरीबी अनुमान, मूल्य अस्थिरता संबंधी डेटा आदि।
- **प्रदर्शन की निगरानी:** देश की सांख्यिकीय प्रणाली सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रकों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए आवश्यक डेटा प्रदान करती है। उदाहरण के लिए: जीवन प्रत्याशा, शैक्षिक उपलब्धि आदि।
- **निष्पक्ष दृष्टिकोण:** सांख्यिकीय प्रणाली नागरिकों को उनके देश की प्रगति की स्थिति के बारे में निष्पक्ष दृष्टिकोण प्रदान करती है।
- **गुणवत्ता आश्वासन:** "आधिकारिक सांख्यिकी" शब्द गुणवत्ता के एक मानक के रूप में कार्य करता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि आधिकारिक आंकड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य सांख्यिकीय मानकों और सिफारिशों के अनुसार एकत्रित, सृजित और प्रसारित किए जाते हैं।
- **बेहतर निर्णय निर्माण:** आधिकारिक आंकड़े साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने, नीति निर्माण और प्रभावी शासन के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, दुनिया भर में डेटा-आधारित निति निर्माण को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **राष्ट्रीय लक्ष्यों की पूर्ति:** यह तार्किक सार्वजनिक बहस को सक्षम करके राष्ट्र को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने दिशा में हो रही प्रगति की निगरानी करने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार यह पारदर्शिता, जवाबदेही और लोकतांत्रिक सिद्धांतों की उन्नति में योगदान देती है।

> "डेटा के बिना आप सिर्फ एक राय रखने वाले दूसरे व्यक्ति हैं।"
>
> डब्ल्यू एडवर्ड्स डेमिंग

चित्र 1.1. सांख्यिकी का महत्त्व

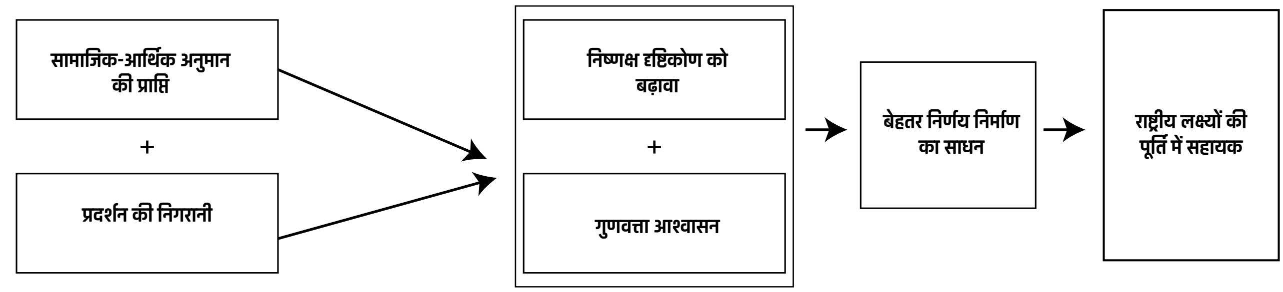

बॉक्स 1.1. एक छोटी सी वार्ता! राष्ट्रीय विकास में सांख्यिकी की भूमिका

विनय

विनी

अरे विनय, तुम्हें याद है कि हम स्कूल में गणित और सांख्यिकी के बारे में हमेशा कैसे शिकायत करते रहते थे?

हाँ, गणित और सांख्यिकी के आँकड़े बहुत जटिल और उबाऊ होते हैं।

अगर मैं तुमसे यह कहूं कि सांख्यिकी हमारे देश के विकास में एक बड़ी भूमिका निभाती है तो क्या होगा?

सचमुच? ऐसा कैसे?

तुम जानते हो, कि सरकार को बहुत सारे निर्णय लेने की जरूरत होती है, है ना? जैसे, स्कूल कहां बनाएं या किसी शहर में हमें कितने डॉक्टरों की जरूरत है। यह सब पता लगाने के लिए वह आंकड़ों का उपयोग करती है।

वाह, ये तो बहुत अच्छा है। तो क्या आंकड़े महत्वपूर्ण विकल्प बनाने के लिए एक साधन की तरह होते हैं?

हां! और ये सिर्फ शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा से ही संबंधित नहीं हैं। यहां तक कि परिवहन में भी आंकड़ों का उपयोग किया जाता है। जैसे यातायात आंकड़ों का उपयोग यह तय करने के लिए करना कि नई सड़कें या पुल कहां बनाए जाएं।

विनय: तो, इसका मतलब यह है कि सांख्यिकी का उपयोग कहीं भी किया जा सकता है।

बिल्कुल, इससे सरकार को यह जानने में मदद मिलती है कि उन्हें अपने प्रयासों को कहां केंद्रित करने की आवश्यकता है। बिना किसी आंकड़े के व्यवस्था को बेहतर बनाने की कोशिश करने की कल्पना करना अँधेरे में तीर चलाने जैसा होगा!

आश्चर्य है, मैंने इसके बारे में इस तरह से कभी नहीं सोचा था। आंकड़े केवल संख्याएं नहीं हैं; वे हमारे जीवन को बेहतर बनाने के लिए मार्गदर्शक की तरह हैं।

बिल्कुल, विनय! यह दिलचस्प है कि वास्तव में संख्याएं हमारे देश के भविष्य को कैसे आकार दे सकती हैं।

1.2. भारत में वर्तमान आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली की संरचना कैसी है?

केंद्रीय स्तर पर आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली भारत सरकार के मंत्रालयों के बीच विकेंद्रीकृत है। साथ ही, ऊर्ध्वाधर रूप से यह केंद्र और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों (UT) के बीच विकेंद्रीकृत है।

- **केंद्र सरकार**: राष्ट्रीय स्तर पर, आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली के लिए **सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय** (MoSPI) नोडल एजेंसी है।
  - MoSPI के **अंतर्गत राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय** (NSO) राष्ट्रीय सांख्यिकीय प्रणाली के एकीकृत विकास की योजना बनाने और उसकी सुविधा प्रदान करने के लिए जिम्मेदार है। NSO, **केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय** (CSO) **और राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय** (NSSO) से मिलकर बना है।
  - NSO के अलावा, अधिकतर संबंधित मंत्रालयों/ विभागों में आंकड़ों के संग्रह और प्रसार तथा NSO के साथ समन्वय के लिए सांख्यिकी संबंधी संस्थाएं स्थापित की गई हैं।
- **राज्य सरकार**: राज्यों में आधिकारिक सांख्यिकीय प्रणाली सामान्यतः राज्य सरकार के विभागों में क्षैतिज रूप से विकेंद्रीकृत है।
  - शीर्ष स्तर पर, राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों में सांख्यिकीय गतिविधियों के समन्वय के लिए **आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय** (DES) जिम्मेदार है।
  - अधिकांश क्षेत्रकों के लिए **डेटा संग्रह, संकलन, प्रॉसेसिंग और परिणामों की घोषणा** राज्यों द्वारा की जाती है। केंद्र इन राज्य-वार परिणामों का उपयोग करके अखिल भारतीय स्तर के आंकड़े तैयार करता है।
- **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग** (NSC): सरकार ने 2006 में सांख्यिकीय मामलों पर एक शीर्ष सलाहकार निकाय के रूप में **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग** का गठन किया था। इसे **सी. रंगराजन आयोग** की सिफारिशों के आधार पर गठित किया गया था।
- **सातवीं अनुसूची**: 'सांख्यिकी' विषय भारत के संविधान की **सातवीं अनुसूची में संघ और समवर्ती** दोनों सूचियों में शामिल है। संघ सूची (सूची- I) की **प्रविष्टि 94** और समवर्ती सूची (सूची- III) की **प्रविष्टि 45** में सांख्यिकी को शामिल किया गया है।
- **संबंधित कानून**: उपर्युक्त उपायों के अलावा विशेष सांख्यिकीय जरूरतों के लिए कुछ कानून भी बनाए गए हैं, जैसे- जनगणना अधिनियम, 1948; जन्म और मृत्यु पंजीकरण अधिनियम, 1969; सांख्यिकी संग्रहण अधिनियम, 2008 आदि।

टेबल 1.1. भारत की सांख्यिकीय प्रणाली के लिए संगठनात्मक ढांचा

केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO)	राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO)
➢ इसकी स्थापना 1949 में की गई थी। इसे **कैबिनेट सचिवालय में एक केंद्रीय सांख्यिकी इकाई** के रूप में स्थापित किया गया था। आगे चलकर इस इकाई को विस्तारित कर **केंद्रीय सांख्यिकी संगठन** (CSO) बना दिया गया था। ➢ CSO द्वारा जारी प्रमुख सांख्यिकी: ▷ राष्ट्रीय आय लेखांकन; ▷ औद्योगिक उत्पादन सूचकांक; ▷ शहरी नॉन-मैन्युअल (Non-Manual) कर्मचारियों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक; ▷ बीस सूत्रीय कार्यक्रम पर वार्षिक रिपोर्ट आदि।	➢ इसकी स्थापना **सांख्यिकी विभाग में 1950** में की गई थी। इसे **फिशर समिति की सिफारिशों** के आधार पर स्थापित किया गया था। ➢ NSSO द्वारा जारी प्रमुख सांख्यिकी: ▷ यह मुख्य रूप से राष्ट्रव्यापी स्तर पर अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक विषयों पर किए जाने वाले घरेलू सर्वेक्षणों के माध्यम से डेटा एकत्र करता है- » उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI); » आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS); » ऋण और निवेश सर्वेक्षण इत्यादि।

अन्य महत्वपूर्ण निकाय

- **उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण (ASI)**: इसे 1959 में शुरू किया गया था। यह औद्योगिक उत्पादन और वेतन पर नियमित डेटा प्रदान करता है।
- **भारतीय सांख्यिकी सेवा (ISS)**: इस कैडर की स्थापना 1964 में की गई थी।
- **नमूना पंजीकरण प्रणाली (SRS)**: इसकी शुरुआत 1969-70 में की गई थी। यह जन्म और मृत्यु पर विश्वसनीय एवं नियमित डेटा प्रदान करती है। यह देश में मृत्यु दर और प्रजनन प्रवृत्तियों पर आधिकारिक डेटा का प्राथमिक स्रोत बनी हुई है।
- **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग**- इसकी स्थापना मंत्रालयों और विभागों में सांख्यिकीय मानक निर्धारित करने के लिए की गई थी, लेकिन अभी तक इसे वैधानिक दर्जा नहीं दिया गया है।

2. भारत की आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली का विकास कैसे हुआ है?

2.1. स्वतंत्रता-पूर्व सांख्यिकी प्रणाली किस स्तर तक विकसित थी?

भारत में सांख्यिकी उतनी ही पुरानी है जितनी कि शासन व्यवस्था। राजकाज पर आधारित प्राचीन भारतीय ग्रंथ, **अर्थशास्त्र** में ग्राम-स्तरीय लेखाकारों के एक नेटवर्क का उल्लेख है। ये लेखाकार आर्थिक उत्पादन पर आंकड़े एकत्र करने के लिए जिम्मेदार थे। मध्यकालीन युग की एक रचना, **'आइन-ए-अकबरी'** भी कृषि उपज पर आंकड़े एकत्र करने के लिए एक विस्तृत तंत्र का विवरण देती है। इसके अलावा, इसमें वजन और माप की प्रणाली को मानकीकृत करने के शाही प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है।

भारत की वर्तमान आधिकारिक सांख्यिकीय प्रणाली ने **ब्रिटिश राज** (1858-1947) के दौरान आकार लेना शुरू किया था।

टेबल 2.1. ब्रिटिश राज के दौरान आधिकारिक सांख्यिकी का विकास

1862	इस समय पहली **सांख्यिकी समिति** की स्थापना की गई थी। इसका कार्य विशेष रूप से व्यापार और वित्त से संबंधित आधिकारिक आंकड़े एकत्र करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों को मानकीकृत करना था।
1868	इंडिया ऑफिस द्वारा लंदन में **ब्रिटिश भारत का पहला सांख्यिकीय सार प्रकाशित** किया गया।
1871	इस वर्ष **सांख्यिकी के पहले महानिदेशक को नियुक्त** किया गया था। इसका उद्देश्य मौजूदा आंकड़ों को समेकित करना और उन्हें भारत के इम्पीरियल गजेटियर में प्रकाशित करना था।
1881	भारत में पहली जनगणना **1867 से 1872** के बीच हुई थी, जिसे 1872 की जनगणना भी कहा जाता है। हालांकि, यह जनगणना केवल कुछ क्षेत्रों में ही सीमित थी। भारत की पहली संपूर्ण जनगणना 1881 में हुई थी।
1895	इस वर्ष एक अलग **सांख्यिकीय ब्यूरो की स्थापना** की गई थी। बाद में इसका विलय **वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय** में कर दिया गया था।
1920	इस वर्ष **लंदन में ब्रिटिश एम्पायर स्टैटिस्टिकल कॉन्फ्रेंस** आयोजित हुई थी। इसमें प्रतिनिधियों ने **सभी ब्रिटिश उपनिवेशों में एक सशक्त सांख्यिकीय कार्यालय के निर्माण का आह्वान** किया था।
1925	**एम. विश्वेश्वरैया** की अध्यक्षता में एक आधिकारिक समिति का गठन किया गया था। समिति को ब्रिटिश भारत के आर्थिक आंकड़ों में मौजूद कमियों का आकलन करने और उनमें सुधार के उपाय सुझाने का काम सौंपा गया था। इस समिति ने एक **केंद्रीय सांख्यिकी ब्यूरो** स्थापित करने की सिफारिश की थी।
1934	एक समिति (सदस्य- **ए. एल. बाउले और डी. एच. रॉबर्टसन**) नियुक्त की गई थी। इसका कार्य **भारत में आर्थिक जनगणना के लिए रोडमैप विकसित** करने का सुझाव देना था।
1946	आर्थिक सलाहकार **थियोडोर ग्रेगरी** की अध्यक्षता में सांख्यिकीविदों की एक अंतरविभागीय समिति गठित की गई थी। इसका उद्देश्य **भारत में आधिकारिक आंकड़ों के संग्रह के समन्वय के लिए तरीके** खोजना था।

बॉक्स 2.1. ब्रिटिश सरकार द्वारा विकसित प्रशासनिक सांख्यिकी प्रणाली से जुड़ी समस्याएं

- **स्वार्थ:** सांख्यिकीय प्रणाली विकसित करने के औपनिवेशिक प्रयास मुख्यतः **ब्रिटिश उत्पादों के लिए प्रमुख बाजार पर नज़र रखने की जरुरत से प्रेरित** थे। इसलिए, घरेलू आर्थिक उत्पादन या सामाजिक-आर्थिक विकास के आंकड़ों को एकत्रित करने की तुलना में **व्यापार संबंधी आंकड़े एकत्रित करने की प्रणाली बहुत अधिक विकसित थी।**
- **सुधार नहीं करना:** कई आधिकारिक समितियों ने **ब्रिटिश भारत में आधिकारिक सांख्यिकीय प्रणाली के एकतरफा विकास में सुधार करने के लिए कई सिफारिशें** की थीं। हालांकि, उनकी अधिकांश सिफारिशें लागू नहीं की गई।
- **दुष्प्रचार:** प्रशासनिक सांख्यिकी के विकास ने दुष्प्रचार का अवसर प्रदान किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने इन आंकड़ों का भारतीय नागरिकों और **ब्रिटिश संसद को यह दिखाने के लिए उपयोग किया कि वे देश पर कितनी अच्छी तरह से शासन** कर रहे हैं।
- **डेटा संग्रह की कमियां: 1925 में एम. विश्वेश्वरैया की अध्यक्षता में आर्थिक जांच समिति** गठित की गई थी। इस समिति ने विशेष रूप से **घरेलू उत्पादन और आय से संबंधित डेटा संग्रह में व्याप्त कमियों** का उल्लेख किया था।

2.2. स्वतंत्रता के बाद सांख्यिकी प्रणाली से संबंधित प्रमुख विकास क्या थे?

- **महालनोबिस मॉडल:** भारत की आजादी के बाद ही भारत के सांख्यिकीय बुनियादी ढांचे के पुनर्गठन हेतु गंभीर प्रयास किए जा सके।
  - **प्रो. पी. सी. महालनोबिस** ने इस अभियान का नेतृत्व किया था। इस अभियान में डेटा संग्रह का **महालनोबिस मॉडल** लागू किया गया। यह काफी हद तक **यादृच्छिक** (Random) **रूप से एकत्रित नमूनों** पर निर्भर था।
    - यादृच्छिक नमूना एकत्रीकरण एक प्रकार का संभावना आधारित नमूना एकत्रण है। इसमें शोधकर्ता **किसी जनसंख्या से प्रतिभागियों के एक उपसमूह का यादृच्छिक रूप से चयन करके आंकड़े एकत्र** करता है।
  - प्रोफेसर महालनोबिस द्वारा तैयार की गई भारत की दूसरी **पंचवर्षीय आर्थिक विकास योजना** के तहत राज्यों में सांख्यिकीय ब्यूरो की स्थापना को वित्त-पोषित किया गया।

- **महालनोबिस के बाद का युग**: प्रो. महालनोबिस की 1972 में मृत्यु हो गई। इसके बाद के दौर में अन्य परिवर्तनों ने सांख्यिकीय प्रणाली को कमजोर कर दिया। **ऐसी कमजोरियों के पीछे निम्नलिखित कारक जिम्मेदार थे**:
  - विश्व के साथ बढ़ता अलगाव,
  - गणना संबंधी संसाधनों में निवेश की कमी, और
  - **योजना आयोग के प्रभाव में कमी**: योजना आयोग पहले सांख्यिकीविदों के लिए समर्थन का एक स्तंभ था।
- **पुनरुद्धार के प्रयास**: सांख्यिकीय प्रणाली की समीक्षा के लिए **1979 में नारायण-भटनागर समिति** की स्थापना की गई। इसके बाद **1984 में खुसरो समिति** की स्थापना की गई।
  - 2000 की शुरुआत में, केंद्र सरकार ने **सी. रंगराजन** के नेतृत्व में एक **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग** नियुक्त किया। इस आयोग की जिम्मेदारी **सांख्यिकीय प्रणाली की कमियों की पहचान करना और उनमें सुधार के उपाय** सुझाना था।

हालांकि, रंगराजन आयोग की सिफारिशों के तहत शुरू किए गए सुधार सराहनीय थे, लेकिन ये प्रणाली में व्याप्त गंभीर कमियों को दूर करने में विफल रहे। फलतः एक बेहतर सांख्यिकीय प्रणाली का विकास अभी भी प्रगति पर है।

टेबल 2.1. रंगराजन आयोग की सिफारिशें और उनके कार्यान्वयन की स्थिति

रंगराजन आयोग की सिफारिशें	कार्यान्वयन की स्थिति
MoSPIके **सचिव को एक पेशेवर सांख्यिकीविद् होना चाहिए,** ताकि उसे सही में राष्ट्रीय सांख्यिकीविद् पदनामित किया जा सके।	इसे क्रियान्वित नहीं किया गया है।
राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (NSC) **नामक एक स्थायी और वैधानिक शीर्ष निकाय** बनाया जाना चाहिए, जो सरकार से निष्पक्ष रहते हुए संसद के प्रति जवाबदेह हो।	NSC को 2006 में स्थापित किया गया था, लेकिन इसे अभी तक वैधानिक दर्जा नहीं दिया गया है।
सांख्यिकी संग्रहण अधिनियम (1953) में सुधार किया जाना चाहिए, ताकि सांख्यिकी अधिकारियों को अधिक शक्तियां प्रदान की जा सकें।	सांख्यिकी संग्रहण अधिनियम-2008 अधिनियमित किया गया था, लेकिन इसके तहत सांख्यिकी काम-काज से जुड़े अधिकारियों को सीमित शक्तियां दी गई हैं।
कंप्यूटर सेंटर डिवीजन (Computer Centre division) का संचालन शुरू करना चाहिए, जो भारत में आधिकारिक आंकड़ों के व्यापक डेटा वेयरहाउस के रूप में कार्य करेगा।	कई प्रयासों के बावजूद भी एक केंद्रीकृत डेटा वेयरहाउस अभी भी एक लक्ष्य बना हुआ है।
जनगणना अधिनियम को संशोधित किया जाना चाहिए, ताकि जनसंख्या जनगणना के मकान-सूचीकरण चरण के दौरान आर्थिक जनगणना आयोजित करने की अनुमति दी जा सके।	इसे कार्यान्वित नहीं किया गया है।

3. भारत की आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में कौन-कौन सी चुनौतियां मौजूद हैं?

- **जनगणना में देरी**: भारत में 1881 से नियमित रूप से जनगणना कराई जाती रही है। पिछली दशकीय जनगणना 2011 में हुई थी। 2021 की जनगणना अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई है।
- **डेटासेट की ख़राब गुणवत्ता**: जहां डेटासेट की कुल संख्या बढ़ रही है, वहीं डेटासेट की गुणवत्ता की समस्या प्रायः विभागों और राज्यों में देखी जाती है।
  - अभी अंतिम आधिकारिक उपभोक्ता व्यय डेटा 2011-2012 से संबंधित है। इसके बाद अगला सर्वेक्षण, 2017-2018 में किया गया, लेकिन **डेटा गुणवत्ता संबंधी चिंताओं** के कारण MoSPI ने इसकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाए थे।
- **मुख्य डेटासेट का अप्रासंगिक होना**: विभिन्न मुख्य डेटासेट अत्यधिक अप्रासंगिक हो चुके हैं।
  - उदाहरण के लिए, उपभोक्ता व्यय पर अपडेटेड डेटा नहीं होने की वजह से भारत का उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) और आधिकारिक गरीबी अनुमान पुराने डेटा पर आधारित हैं।
- **सर्वेक्षणों को बंद करने से डेटा प्राप्त नहीं हो पाते हैं**: NSSO द्वारा जारी रोजगार-बेरोजगारी सर्वेक्षण (EUS) जैसे कई सर्वेक्षणों को बंद कर दिया गया है। सर्वेक्षणों की विश्वसनीयता और ऐसे सर्वेक्षणों की जरुरत का हवाला देकर इन्हें बंद किया गया है। डेटा-एकत्रित करने की नीतियों में इस तरह के बार-बार होने वाले बदलाव विश्लेषण को बाधित करते हैं और अंतराल पैदा करते हैं।
- **विवादास्पद डेटा**: नवीनतम आर्थिक जनगणना और कई नए सर्वेक्षणों के परिणामों को जारी नहीं किया गया है। भारत के कुछ **मुख्य सांख्यिकीय आंकड़े** कई वर्षों से विवादित रहे हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं; **औद्योगिक उत्पादन सूचकांक** (IIP) और सकल **घरेलू उत्पाद** (GDP) संबंधित डेटा।
- **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (NSC) की सीमित शक्तियां**: भारत के शीर्ष सांख्यिकीय विनियामक, NSC को भारतीय सांख्यिकी को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर अपना पक्ष रखने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ती है।
  - NSC का कार्य नियमित आधार पर सांख्यिकीय आंकड़ों की समीक्षा करना है। इससे डेटा का उपयोग करने वाले डेटा के गुणवत्तापूर्ण और विश्वसनीय होने के प्रति आश्वस्त रहते हैं। हालांकि यह संगठन **अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से नहीं निभा पाया है**। इसके अलावा, NSC को लगभग दो दशकों से वैधानिक दर्जा नहीं प्रदान किया गया है।
- **स्पष्ट रोडमैप का अभाव**: आधिकारिक सांख्यिकी डेटा के निर्माताओं और उपयोगकर्ताओं ने इस संबंध में स्पष्ट रोडमैप के अभाव की ओर इशारा किया है। वर्तमान सांख्यिकीय प्रक्रियाओं के कारण उत्पन्न होने वाले विवादों से बचने के लिए एक स्पष्ट रोडमैप आवश्यक है।
- **कुशल श्रमिकों की कमी और खराब कार्य-दशाएं**: कई शोधकर्ताओं ने सीमित संसाधनों और असंगठित कार्य शेड्यूल के मुद्दे को उठाया है।
  - उदाहरण के लिए, NFHS के तहत सर्वेक्षण आयोजित करने के लिए अनुबंधित कई फील्ड एजेंसियां श्रम कानूनों का उल्लंघन करते हुए पाई गई हैं।

बॉक्स 3.1. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के डेटा से संबंधित मुद्दे: एक शोधकर्ता का दृष्टिकोण

शोधकर्ताओं ने सर्वेक्षण में शामिल कई खामियों को रेखांकित किया गया है। इनमें कुछ मुख्य खामियां निम्नलिखित हैं:

- **लंबी प्रश्नावली:** NFHS-4 में, महिलाओं से संबंधित प्रश्नावली 93 पृष्ठों की हैं। इसमें कुल 1,139 प्रश्न हैं। यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि प्रश्नावली जितनी लंबी होगी, डेटा की गुणवत्ता उतनी ही खराब होगी।
- **प्रश्न पूछने में कठिनाई:** यौन हिंसा, एचआईवी/एड्स जैसे विषयों से संबंधित प्रश्न पूछना कठिन होता है क्योंकि इस तरह के प्रश्न पूछते समय निजता की सुरक्षा सुनिश्चित करना मुश्किल होता है। इससे डेटा की विश्वसनीयता प्रभावित होती है।
- **डेटा गुणवत्ता:** जब फील्ड शोधकर्ता कठिन परिस्थितियों में कार्य करते हैं, तो कार्य प्रभावित होता है और यह डेटा की गुणवत्ता को भी प्रभावित कर सकता है।
  - डेटा की गुणवत्ता न केवल चल रहे सर्वेक्षण चक्र के लिए प्रासंगिक है, बल्कि इस डेटा पर निर्भर बाद के सर्वेक्षणों और विश्लेषणों के लिए भी प्रासंगिक है।
- **वित्तीय पारदर्शिता का अभाव:** सार्वजनिक स्वास्थ्य शोधकर्ताओं ने NFHS कराने पर अधिक व्यय पर भी सवाल उठाए हैं। उनके अनुसार, सर्वेक्षण में जितना खर्च किया जाता है, उसके अनुरूप बेहतर गुणवत्ता का डेटा प्राप्त नहीं हुआ है।

चित्र 3.1. आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में चुनौतियां

डेटा संग्रह	डेटा उपयोग	संस्थागत सेटअप
जनगणना संबंधी डेटा संग्रह में बाधा डेटासेट की निम्न गुणवत्ता सर्वेक्षणों को बंद करना	डेटासेट पुराने हो जाते हैं (समय पर उपयोग नहीं होते) विवादास्पद डेटा	राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग (NSC) की सीमित शक्तियां स्पष्ट रोडमैप का अभाव कुशल श्रमिकों की कमी और खराब कार्य-दशाएं

उपर्युक्त समस्याओं ने डेटा की विश्वसनीयता और इसकी उपयोगिता को सीमित कर दिया है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण और बहुआयामी प्रयास किये जा रहे हैं।

4. आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में सुधार के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

4.1. सरकार द्वारा शुरु की गईं प्रमुख पहलें क्या हैं?

- **डेटा उपलब्धता में वृद्धि:** ग्रामीण सड़क निर्माण से लेकर वाहन पंजीकरण जैसे कई महत्वपूर्ण आर्थिक मापदंडों पर बहुत अधिक और बहुत सटीक डेटा स्थानीय स्तर पर भी उपलब्ध हैं।
- **सार्वजनिक डेटा-सेट का मानकीकरण:** सार्वजनिक डेटा-सेट का मानकीकरण करने और नागरिकों तक उनकी पहुंच सुलभ बनाने के लिए कई पहलें की गई हैं। उदाहरण के लिए, MoSPI ने **"राष्ट्रीय संकेतक फ्रेमवर्क"** दस्तावेज़ के लिए **मेटाडेटा** की स्थापना की है।
- **डिजिटल इंडिया:** इस पहल ने विश्व स्तरीय डिजिटल सेवाओं की शुरुआत के साथ ई-गवर्नेंस प्रणाली में बदलाव ला दिया है। इन नई सेवाओं की वजह से डेटा का प्रवाह बेहतर हुआ है। इसने सरकार को नए डेटा स्रोतों का उपयोग करके समय पर निर्णय लेने में सक्षम बनाया है।
- **वैश्विक मानकों को अपनाना:** भारत ने 2016 में संयुक्त राष्ट्र आधिकारिक सांख्यिकी के बुनियादी सिद्धांत (UNFPOS) को अपनाया और अपनी आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली को UNFPOS के सिद्धांतों के अनुरूप बना रहा है।

टेबल 4.1. UNFPOS के सिद्धांत और भारत में उनके कार्यान्वयन की स्थिति

क्रम संख्या	UNFPOS	कार्यान्वयन की स्थिति
1	डेटा की प्रासंगिकता, निष्पक्षता तथा उन तक समान पहुंच सुनिश्चित करना	भारत ने उचित सांख्यिकीय पद्धतियों की सिफारिश करने के लिए समय-समय पर समितियों और तकनीकी कार्य-समूहों का गठन किया है। **कैलेंडर को अग्रिम रूप** से तथा **सांख्यिकीय रिपोर्ट** को सार्वजनिक डोमेन में जारी किया जाता है।
2	व्यावसायिक मानक, वैज्ञानिक सिद्धांत और व्यावसायिक नैतिकता सुनिश्चित करना	वैज्ञानिक नमूना पद्धतियाँ, **मानक सांख्यिकीय तकनीकें,** व्यापक जांच तथा राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन द्वारा पर्यवेक्षण तंत्र विकसित किया गया है।
3	जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करना	सभी प्रासंगिक **दस्तावेज सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध** कराए जाते हैं।
4	दुरुपयोग रोकना	सरकार ने डेटा से संबंधित चिंताओं को दूर करने के लिए व्यापक **मेटाडेटा** स्थापित किया है और इसके लिए **प्रेस स्पष्टीकरण** तथा **व्याख्यात्मक नोट्स** भी जारी किए जाते हैं।
5	आधिकारिक सांख्यिकी के स्रोत	सांख्यिकीय उत्पादों के लिए **राष्ट्रीय मेटाडेटा संरचना** निर्धारित की गई है। यह संरचना सभी आधिकारिक एजेंसियों तक डेटा के प्रसार के लिए मानक निर्धारित करती है।

6	गोपनीयता/निजता की सुरक्षा	➢ व्यक्तियों/संस्थाओं/उत्तरदाताओं की **पहचान उजागर करने वाले डेटा को "अनाम"** रखने के लिए प्रयास किए गए हैं।
7	कानूनी समर्थन	➢ उचित कानून बनाकर डेटा संग्रह और उपयोग को प्रशासित किया जाता है। ऐसे कानूनों के उदाहरण हैं; सांख्यिकी संग्रहण अधिनियम, 2008; जनगणना अधिनियम, 1948; इत्यादि।
8	राष्ट्रीय स्तर पर समन्वय	➢ इसके लिए MoSPI एक नोडल निकाय है।
9	अंतर्राष्ट्रीय मानकों का उपयोग	➢ सांख्यिकीय रिपोर्ट/प्रोडक्ट तैयार करने में **अंतर्राष्ट्रीय अवधारणाओं, परिभाषाओं और मानकों का पालन** किया जा रहा है।
10	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	➢ सांख्यिकीय मामलों पर लगभग सभी मुख्य वैश्विक विचार-विमर्श प्लेटफॉर्म्स से भारत जुड़ा हुआ है और उनमें भागीदारी करता रहा है। ➢ भारत को 2024-2027 की अवधि के लिए **संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी आयोग (UNSC) के सदस्य** के रूप में चुना गया है।

उपर्युक्त उपायों के अलावा, MoSPI ने **आधिकारिक साख्यिकी पर राष्ट्रीय नीति (NPOS)** के मसौदे को जारी किया है।

4.2. आधिकारिक सांख्यिकी पर राष्ट्रीय नीति (NPOS) कैसे मदद कर सकती हैं?

NPOS निम्नलिखित तरीकों से सांख्यिकीय प्रणाली में संरचनात्मक बदलाव ला सकती है-

- **एकीकृत डेटा प्रणाली (Integrated Data System: IDS) की स्थापना:** MoSPI के नेतृत्व में स्थापित IDS डेटा-सेट्स को आपस में निर्बाध रूप से जोड़ देगी। साथ ही, यह राष्ट्रीय और राज्य/केंद्र शासित प्रदेश स्तर पर डेटा उत्पन्न करने वाली विभिन्न प्रणालियों के बीच **इंटर-ऑपरेबिलिटी को बढ़ावा देगी।** IDS में निम्नलिखित विशेषताएं शामिल होंगी:
  - **डिजिटल सर्वे प्लेटफॉर्म:** इसका उद्देश्य कंप्यूटर की सहायता से साक्षात्कार तथा ऑनलाइन डेटा वितरण को बढ़ावा देना है।
  - **डेटा वेयरहाउस की स्थापना:** इसका उद्देश्य डेटा प्राप्ति, भंडारण, प्रोसेसिंग, एनालिटिक्स तथा मेटा-डेटा रिपॉजिटरी के साथ आर्काइव स्वरूप प्रदान करना है।
  - **अत्याधुनिक आउटपुट प्रणाली का निर्माण:** इसका उद्देश्य डेटा तक बेहतर पहुंच और प्रसार सुनिश्चित करना है।
  - **नवाचार केंद्र की स्थापना:** यहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जाएगा।
- **प्रशासनिक डेटा का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करना:** प्रशासनिक डेटा कुछ प्रशासनिक कार्यों के क्रम में प्राप्त किए जाते हैं। आमतौर पर तीन व्यापक उद्देश्यों के लिए ये डेटा एकत्र किए जाते हैं:
  - सरकारी कार्यक्रमों तथा सरकार के कुछ अन्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु;
  - विनियामक कार्यों और लेखा-परीक्षा कार्यों में मदद के लिए; तथा
  - सरकारी कार्यों के आउटकम्स से जुड़े डेटा प्राप्त करने में।

NPOS का लक्ष्य GDP जैसे सांख्यिकीय संकेतकों की गणना के लिए मौजूदा प्रशासनिक डेटा के उपयोग को बढ़ावा देना और उनके उपयोग को सुलभ बनाना है।

- **मुख्य आधिकारिक सांख्यिकी:** कुछ मुख्य सांख्यिकीय डेटा, जैसे- GDP, मूल्य सूचकांक, SDGs आदि को कोर सांख्यिकी डेटा (Core statistics data) के रूप में डिजाइन किया जाएगा। इस कोर डेटा के लिए निम्नलिखित कारकों को सुनिश्चित किया जाना चाहिए:
  - सरकार के सभी स्तरों पर तय प्रोटोकॉल के अनुसार डेटा संग्रह और उसका प्रसार करना अनिवार्य किया जाना चाहिए।
  - **तय अवधि** पर इन **डेटा को अपडेट** किया जाना चाहिए।
  - सभी अलग-अलग स्तरों पर इन **डेटा को उपलब्ध कराया जाना** चाहिए।
- **सर्वेक्षणों पर नवाचार:** NPOS विभिन्न सर्वेक्षणों की योजना बनाने और तैयार करने में नवाचार पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके जरिए डेटा उपलब्ध कराने में कमियों की पहचान करने, दोहराव से बचने और तय समय पर सर्वे कराते हुए उनके परिणामों को जारी करने में मदद मिलेगी।
- **आधिकारिक सांख्यिकी की गुणवत्ता में वृद्धि:** यह सांख्यिकी की तय समय पर समीक्षा करने, शामिल चरणों को दर्ज करने, नीति आयोग के डेटा गवर्नेंस गुणवत्ता सूचकांक के अनुरूप डेटा प्रोडक्ट्स को सुसंगत बनाने और अत्याधुनिक तकनीकी टूल्स के उपयोग को बढ़ावा देगी।
- **सांख्यिकीय समन्वय को बढ़ाना:** MoSPI के साथ समन्वय करने के लिए केंद्रीय मंत्रालयों और राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के लिए एक संस्थागत तंत्र की स्थापना की जाएगी। यह समन्वय सांख्यिकीय सलाहकारों के माध्यम से किया जाएगा।
- **सांख्यिकीय अधिकारियों का क्षमता विकास:** यह विभिन्न योजनाओं के वित्त-पोषण के माध्यम से किया जाएगा। इनमें प्रशिक्षण, अवसंरचनाओं में वृद्धि, जन जागरूकता अभियान, सांख्यिकीय पेशेवरों को अंतर्राष्ट्रीय पद्धतियों से अवगत कराना, इत्यादि शामिल हैं।

5. भारत की आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली को और बेहतर बनाने के लिए क्या किया जा सकता है?

NPOS के प्रभावी कार्यान्वयन के अलावा, भारत की डेटा क्रांति से बेहतर लाभ प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित प्रयास किए जा सकते हैं-

- **सांख्यिकीय सुधार आयोग (SRC) का गठन:** भारत की सांख्यिकीय प्रणाली की मुख्य समस्याओं के समाधान के लिए रंगराजन आयोग की तर्ज पर एक SRC की स्थापना की जा सकती है।
- **गतिशील सांख्यिकीय संरचना:** एक ऐसी नई गतिशील सांख्यिकीय संरचना तैयार की जा सकती है जो डेटा यूजर्स की नित नई जरूरतों को पूरा करने में सक्षम हो। इसमें सभी प्रमुख हितधारकों की चिंताओं का ध्यान रखते हुए एक राष्ट्रीय सांख्यिकीय रणनीति डॉक्यूमेंट शामिल किया जाना चाहिए।
- **सांख्यिकीय अवसंरचना को मजबूत करना:** भारतीय अर्थव्यवस्था पर रियल टाइम आधार पर नजर रखने के लिए एक मॉडल पर विचार किया जा सकता है। इस मॉडल में प्रशासनिक डेटा के साथ-साथ सांख्यिकीय डेटा और रजिस्ट्रियों को मजबूत करने तथा एकीकरण करने पर ध्यान दिया जाना चाहिए (इन्फोग्राफिक देखिए)।
- **अनुसंधान संबंधी परिवेश में सुधार:**
  - क्षेत्रीय एजेंसियों को जवाबदेह बनाया जाना चाहिए और शोधकर्ताओं की **शिकायतों का समाधान** किया जाना चाहिए।
  - डेटा संग्रह का कार्य करने वाली क्षेत्रीय एजेंसी की **प्रशासनिक क्षमता और प्रशिक्षण क्षमता** सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ ही, उनकी स्थानीय स्तर पर उपस्थिति भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

चित्र 5.1. सांख्यिकीय अवसंरचना का एकीकरण

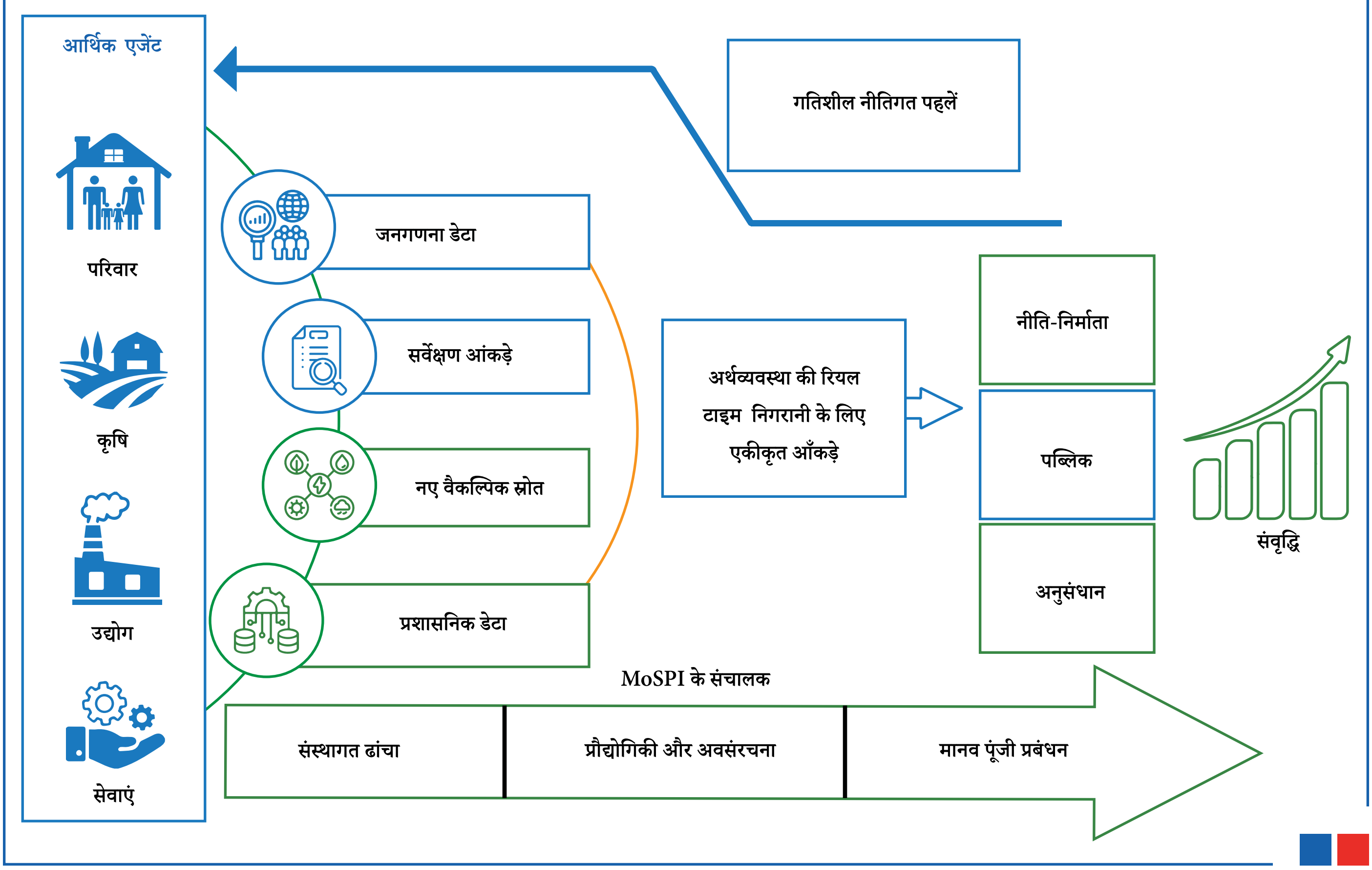

- **एकीकरण के लिए अन्य प्रौद्योगिकी का उपयोग:** कई प्रौद्योगिकियां डेटा के संग्रह, एकीकरण, विश्लेषण के साथ-साथ प्रसार में मदद करती हैं। इनमें बिग डेटा, क्लाउड कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, इत्यादि शामिल हैं।
  - उदाहरण के लिए- सरकारी आंकड़ों के साथ **सरकारी रजिस्ट्रियों का एकीकरण किया** जा सकता है। विभिन्न सरकारी स्रोतों (जैसे- पैन, आधार नंबर, GSTN आदि) से प्राप्त डेटा और रजिस्ट्रियों को **एग्रीगेटर प्रौद्योगिकियों** के माध्यम से एकीकृत करने की आवश्यकता है।
  - एक अत्याधुनिक डेटा वेयरहाउस और डेटा आर्काइव बनाने की आवश्यकता है, जो **ऑनलाइन एनालिटिकल प्रोसेसिंग** (Online Analytical Processing: OLAP) की क्षमता से लैस हो।
- **भारत डेटा प्रबंधन कार्यालय (IDMO):** डिजिटल इंडिया कॉर्पोरेशन के तहत IDMO की स्थापना की जाएगी, ताकि सभी डेटा/ डेटा-सेट/ मेटाडेटा के लिए नियम, मानक और दिशा-निर्देश तैयार किए जा सकें।

6. निष्कर्ष

भारतीय सांख्यिकी प्रणाली ने देश में तथ्यों के आधार पर निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही, इसने योजनाबद्ध सामाजिक-आर्थिक विकास में भी योगदान दिया है। हालांकि, अभी भी इसमें कई कमियां मौजूद हैं। इसलिए भारतीय नागरिकों, नीति-निर्माताओं और निवेशकों की अपेक्षा के अनुरूप उच्च-गुणवत्ता वाले बेहतर डेटा-सेट उपलब्ध कराने के लिए व्यवस्थित सुधारों की आवश्यकता है।

> "आंकड़ों के माध्यम से झूठ बोलना आसान है, लेकिन आंकड़ों के बिना सच बताना कठिन है।"
>
> आंद्रेज डंकल्स

टॉपिक - एक नज़र में

भारतीय सांख्यिकी प्रणाली: विकास को बढ़ावा देने के लिए डेटा को बेहतर तरीके से समझना

सांख्यिकी एक तरह का विज्ञान है। इसके तहत अनुभवों पर आधारित डेटा को एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना, उसकी व्याख्या करना और उसे प्रस्तुत करने के तरीकों का विकास तथा उसका अध्ययन किया जाता है। यह सतत आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है।

आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली

- **सरकार के सभी स्तरों पर सृजित** आधिकारिक आंकड़े, **सार्वजनिक संपत्ति** होते हैं।
- ये प्रमुख सामाजिक-आर्थिक मानदंडों के आधार पर **प्रदर्शन** को मापते हैं और **साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण** में मदद करते हैं।
- भारत में आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली एक तरह से विकेंद्रीकृत है और इसे **भारत सरकार के अलग-अलग मंत्रालयों के स्तर पर पूरा किया जाता है**। साथ ही, ऊर्ध्वाधर रूप से यह **केंद्र और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों (UT)** के बीच **विकेंद्रीकृत** है।
- राष्ट्रीय स्तर पर, आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली के लिए **सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय** (MoSPI) नोडल एजेंसी है।

भारत की मौजूदा सांख्यिकी प्रणाली में चुनौतियां

- भारत में 1881 से नियमित रूप से जनगणना कराई जाती रही है। पिछली दशकीय जनगणना 2011 में हुई थी। 2021 की जनगणना अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी गई है।
- कई सारे डेटासेट बहुत अधिक अप्रासंगिक हो चुके हैं, उदाहरण के लिए- उपभोक्ता व्यय, गरीबी पर डेटा।
- डेटासेट की ख़राब गुणवत्ता और मौजूदा डेटा के बारे में स्पष्ट समझ की कमी।
- NSSO, EUS जैसे कई सर्वेक्षणों को बंद कर दिया गया है। इससे डेटा की कमी हो सकती है।
- भारत के शीर्ष सांख्यिकीय विनियामक **राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग** (NSC) **के पास शक्तियां सीमित हैं।**
- सांख्यिकीय प्रक्रियाओं के कारण उत्पन्न होने वाले विवादों से बचने के लिए **स्पष्ट रोडमैप की कमी** है।
- **कुशल श्रमिकों की कमी** और शोधकर्ताओं के लिए खराब कार्य-दशाएं।

आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में सुधार हेतु किए गए उपाय

- **सार्वजनिक डेटासेट को मानकीकृत करने** के लिए MoSPI, नीति आयोग एवं इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं।
- वैश्विक मानकों और **आधिकारिक सांख्यिकी से संबंधित संयुक्त राष्ट्र के बुनियादी सिद्धांतों** को अपनाया जा रहा है।
- MoSPI द्वारा **आधिकारिक सांख्यिकी पर राष्ट्रीय नीति** (NPOS) का मसौदा जारी किया गया है।
- **डिजिटल इंडिया** पहल के तहत नए डेटा एवं समय पर डेटा के प्रवाह और उपलब्धता को सक्षम बनाया गया है।

आधिकारिक सांख्यिकी पर राष्ट्रीय नीति (NPOS) का मसौदा

- डिजिटल सर्वेक्षण प्लेटफ़ॉर्म, डेटा वेयरहाउस और इनोवेशन हब के साथ-साथ **एकीकृत डेटा सिस्टम** तैयार करना।
- सांख्यिकीय संकेतकों की गणना के लिए मौजूदा **प्रशासनिक डेटा के उपयोग** को बढ़ावा देना और उनके उपयोग को सुलभ बनाना।
- कुछ मुख्य सांख्यिकीय डेटा, जैसे- GDP, मूल्य सूचकांक, SDGs आदि को कोर सांख्यिकी डेटा (Core statistics data) के रूप में डिजाइन किया जाएगा।
- दोहराव से बचने के लिए **विभिन्न सर्वेक्षणों की योजना और विकास को नई दिशा देना।**
- आवधिक समीक्षा के जरिए आधिकारिक आंकड़ों की **गुणवत्ता में सुधार** करना।

आगे की राह

- **सांख्यिकीय सुधार आयोग** (SRC) **का गठन** किया जाना चाहिए।
- नई व गतिशील सांख्यिकीय संरचना और रणनीति तैयार की जानी चाहिए।
- प्रशासनिक डेटासेट में मौजूद कमियों को दूर करने के लिए **नियमित सर्वेक्षण** किए जाने चाहिए।
- भारतीय अर्थव्यवस्था की रियल-टाइम निगरानी करने के लिए **सांख्यिकीय अवसंरचना को मजबूत करने** की आवश्यकता है।
- सांख्यिकी संबंधी डेटा के संग्रह में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी एडवांस **प्रौद्योगिकियों का उपयोग** किया जाना चाहिए।
- क्षमता निर्माण के लिए और शोधकर्ताओं को बेहतर प्रोत्साहन देकर **अनुसंधान परिवेश में सुधार करने** की आवश्यकता है।
- IDMO की स्थापना की जानी चाहिए।

बॉक्स, टेबल और चित्र

बॉक्स 1.1. एक छोटी सी वार्ता! राष्ट्रीय विकास में सांख्यिकी की भूमिका 3
बॉक्स 2.1. ब्रिटिश सरकार द्वारा जारी प्रशासनिक आंकड़ों से जुड़ी समस्याएं 5
बॉक्स 3.1. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) के डेटा से संबंधित मुद्दे: एक शोधकर्ता का दृष्टिकोण 7
टेबल 1.1. भारत की सांख्यिकीय प्रणाली के लिए संगठनात्मक ढांचा 4
टेबल 2.1. रंगराजन आयोग की सिफ़ारिशें और उनके कार्यान्वयन की स्थिति 6
टेबल 4.1. UNFPOS के सिद्धांत और भारत में उनके कार्यान्वयन की स्थिति 8
चित्र 1.1. सांख्यिकी का महत्त्व 2
चित्र 2.1. ब्रिटिश राज के दौरान आधिकारिक सांख्यिकी का विकास 5
चित्र 3.1. आधिकारिक सांख्यिकी प्रणाली में चुनौतियां 7
चित्र 5.1. सांख्यिकीय अवसंरचना का एकीकरण 9

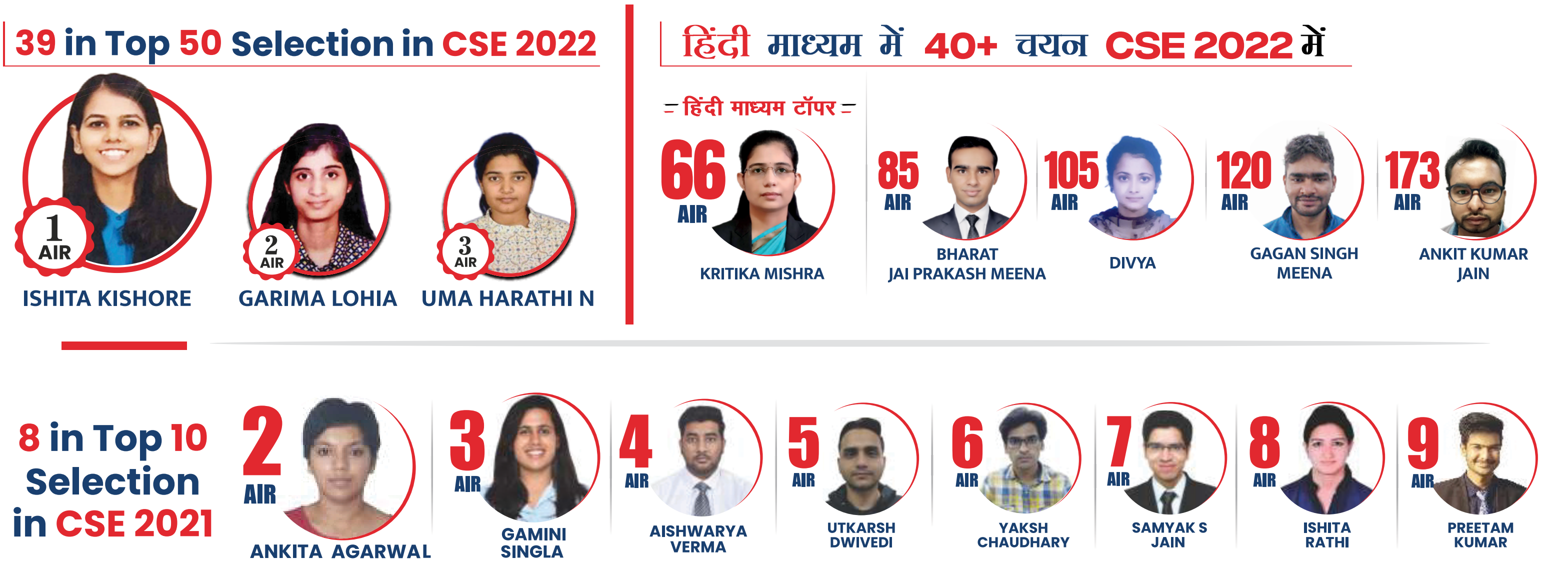

दिल्ली
HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B, 1st Floor, Near Gate-6, Karol Bagh Metro Station, Delhi

MUKHERJEE NAGAR CENTRE
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar, Delhi

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066

1 AIR SHUBHAM KUMAR CIVIL SERVICES EXAMINATION 2020

ENQUIRY@VISIONIAS.IN /VISION_IAS WWW.VISIONIAS.IN /C/VISIONIASDELHI VISION_IAS /VISIONIAS_UPSC

अहमदाबाद भोपाल चंडीगढ़ गुवाहाटी हैदराबाद जयपुर जोधपुर लखनऊ प्रयागराज पुणे राँची सीकर